सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय)

नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन हेतु एकीकृत दृष्टिकोण पर वैज्ञानिक प्रशिक्षण: एक रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.), शिमला ने नूरपुर वन मण्डल के वन अधिकारी, कर्मचारियों, फील्ड स्टाफ एवं अन्य हितधारकों को **'नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन हेतु एकीकृत दृष्टिकोण पर वैज्ञानिक प्रशिक्षण'** कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 19/09/2024 को क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केन्द्र, जाच्छ, नूरपुर, जिला कांगड़ा में किया गया। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय प्राधिकरण प्रतिपूरक वनीकरण निधि प्रबंधन और योजना प्राधिकरण **(CAMPA),** नई दिल्ली द्वारा वित पोषित परियोजना 'All India coordinated research project on *Dalbergia sissoo'* के अंतर्गत किया गया। प्रशिक्षण मुख्य रूप से शीशम को हानि पहुंचाने वाले रोगों और रोगजनकों के प्रबंधन, उच्च गुणवत्ता वाले वृक्षों का चयन एवं क्लोनल प्रोपेगेशन द्वारा शीशम की पौधशाला तैयार करने के लिए जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था । डॉ. अश्विनी तपवाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक, हि.व.अ.सं., शिमला और उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक ने मुख्य अतिथि श्री अमित शर्मा, वन मंडलाधिकारी, वन मण्डल नूरपुर एवं विशिष्ट अतिथि, डॉ॰ विपिन गुलेरिया, सह-निदेशक क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केन्द्र जाच्छ और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों के बारे में जानकारी दी और संस्थान के शोध कार्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. तपवाल ने बताया पेड़ पौधों पर बीमारी करने वाले कवक/फफूंद वन पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा हैं, जो पेड़ों की बड़े पैमाने पर मृत्यु और जैव विविधता संतुलन को अस्तव्यस्त करने का कारण बन सकते हैं। पेड़ों की संख्या को संरक्षित रखने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए रोगजनक कवक का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। डॉ. तपवाल ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के अतिरिक्त, गैनोडरमा व

फ़्युजेरियम कवक की प्रजातियाँ शीशम की संख्या कम होने का मुख्य कारण हैं। इसके लिए जैव कवकनाशी बेहतर विकल्प प्रतीत होते हैं। इस संदर्भ में हि.व.अ.सं., शिमला ने शीशम को कवक जनित रोगों से बचाने के लिए ट्राइकोडर्मा प्रजाति से जैव कवकनाशी तैयार किया है। उन्होंने इस जैव कवकनाशी को तैयार और उपयोग करने की विधि भी सांझा की। इसके अतिरिक्त डॉ. तपवाल ने माइकोराइजल जैव उर्वरकों के उपयोग से टाल पौध स्टाक तैयार करने तथा वनों में माइकोराइजा में महत्व पर भी प्रकाश डाला।

डॉ॰ विपिन गुलेरिया, क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केन्द्र जाच्छ ने कहा कि जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों का उपयोग फसलों की जैविक खेती में लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ समाधान हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को फसल की खेती और रोग प्रबंधन के लिए पर्यावरण के अनुकूल साधनों को अपनाने की सलाह दी।

श्री अमित शर्मा, वन मंडलाधिकारी, वन मण्डल नूरपुर ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि समय रहते वनों व पौधशाल में रोगों की पहचान करने से भविष्य में उनके द्वारा होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों को पौध रोगों के निवारण हेतु पर्यावरण हितैषी प्रबंधन की सलाह दी। उन्होंने भविष्य में भी हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान व वन विभाग के मिलकर वन सबंधी समस्या पर काम करने पर जोर दिया।

डॉ. बालकृष्ण तिवारी, वैज्ञानिक, हि.व.अ.सं., शिमला एवं कार्यक्रम के सह-समन्वयक ने वृक्ष सुधार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया की उच्च गुणवत्ता वाले वृक्षों के चयन, प्रवर्धन एवं उचित प्रबंधन से वन उत्पादकता बढ़ायी जा सकती है। उन्होंने संस्थान द्वारा शीशम के वृक्ष सुधार पर किये जा रहे कार्यों से अवगत कराया तथा प्लस पेड़ों के चयन विधि और बीज एवं कायिक प्रवर्धन द्वारा उच्च गुणवत्ता वाले पौधे विकसित करने के तरीकों को प्रतिभगियों से साझा किया। डॉ. तिवारी ने बताया की वृक्ष सुधार विधि द्वारा शीशम के रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले प्रजातियों को विकसित किया जाना आवश्यक है एवं हि.व.अ.सं., शिमला इस दिशा में प्रयासरत है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियाँ

BenQ

BenQ

Training on Integrated Approach for Management of
Shisham in Nursery and Plantation

कार्यक्रम प्रशिक्षण केंद्र जाच्छ में वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्यातिथि डीएफओ नूरपुर अमित शर्मा ने दिया जोर

वन अनुसंधान संस्थान-वन विभाग मिलकर कम करें वन समस्याएं

कार्यालय संवाददाता- नूरपुर

क्षेत्रीय बागबानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र जाच्छ (नूरपुर) में गुरुवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा नूरपुर वन मंडल के वन अधिकारी, कर्मचारियों एवं फील्ड स्टाफ को नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन हेतु एकीकृत दृष्टिकोण पर वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में डीएफओ नूरपुर अमित शर्मा ने बतौर मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की, जबकि क्षेत्रीय बागबानी अनुसंधान एंव प्रशिक्षण केंद्र जाच्छ के सह निदेशक डा. विपिन गुलेरिया ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। इस मौके पर डा. अश्वनी तपवाल वरिष्ठ वैज्ञानिक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला और उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक ने मुख्यातिथि व विशिष्ट अतिथि का स्वागत किया।

यह प्रशिक्षण मुख्य रूप से शीशम को हानि पहुंचाने वाले रोगों और रोगजनकों के प्रबंधन एवं क्लोनल प्रोपेगेशन द्वारा शीशम की पौधशाला तैयार करने पर जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था। कार्यक्रम के मुख्यातिथि डीएफओ नूरपुर अमित शर्मा ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि समय रहते वनों व पौधशाला में रोगों की पहचान करने से भविष्य में उनके द्वारा होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों को पौध रोगों के निवारण हेतु पर्यावरण हितैषी प्रबंधन की सलाह दी। उन्होंने भविष्य में भी हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान व वन विभाग मिलकर वन सबंधी समस्या पर कम करने पर जोर दिया। डा. तपवाल ने बताया पेड़-पौधों पर बीमारी करने वाले कवक/ फफूंद वन पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा है, जो पेड़ों की बड़े पैमाने पर मृत्यु और जैव विविधता संतुलन को अस्तव्यस्त करने का कारण बन सकते उन्होंने इस जैव कवकनाशी को तैयार और उपयोग करने की विधि भी साझा की। डा. विपिन गुलेरिया, क्षेत्रीय बागबानी अनुसंधान केंद्र जाच्छ ने कहा कि जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों का उपयोग फसलों की जैविक खेती में लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ समाधान हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को फसल की खेती और रोग प्रबंधन के लिए पर्यावरण के अनुकूल साधनों को अपनाने की सलाह दी।

epaper.divyahimachal.com
दिव्य हिमाचल
Fri, 20 September 2024
https://epaper.divyahimachal.com/c/75883425

शीशम के पौधों को नुकसान पहुंचाने वाले रोगों से बचाव पर किया जागरूक

संवाद सहयोगी, जागरण • नूरपुर : क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र जाच्छ में वीरवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान शीशम को हानि पहुंचाने वाले रोगों से बचाव और शीशम की पौधशाला तैयार करने पर जागरूक किया गया।

कार्यक्रम में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अश्विनी तपवाल ने मुख्य अतिथि नूरपुर के वन मंडल अधिकारी अमित शर्मा एवं विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र जाच्छ के सह निदेशक डा. विपिन गुलेरिया व प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने संस्थान के शोध कार्यों पर प्रकाश

- क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र में दिया प्रशिक्षण
- रोग प्रतिरोधक क्षमता की प्रजातियां विकसित करना आवश्यक

जाच्छ में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के दौरान वन मंडल अधिकारी अमित शर्मा कर्मचारियों को संबोधित करते • जागरण

डाला। डा. तपवाल ने बताया कि पेड़ों की संख्या को संरक्षित रखने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए रोगजनक कवक का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। डा. विपिन गुलेरिया ने प्रतिभागियों को फसल की खेती और रोग प्रबंधन के लिए पर्यावरण के अनुकूल साधनों को अपनाने की सलाह दी। अमित शर्मा ने कहा कि समय रहते वनों व पौधशाला में रोगों की पहचान करने से भविष्य में उनके द्वारा होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डा. बालकृष्ण तिवारी ने वृक्ष सुधार के महत्व पर प्रकाश डाला। डा. तिवारी ने बताया वृक्ष सुधार द्वारा शीशम की रोग प्रतिरोधक क्षमता वाली प्रजातियों को विकसित करना आवश्यक है एवं हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला इस दिशा में प्रयासरत है।

Amar Ujala, 20/09/2024

खबर देवभूमि तक

नूरपुर, खबर व विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें (9882253372)

हिमाचल प्रदेश

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.), शिमला ने नूरपुर वन मण्डल के वन अधिकारी, कर्मचारियों एवं फील्ड स्टाफ को नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन हेतु एकीकृत दृष्टिकोण पर वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का किया आयोजन

क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केन्द्र, जाच्छ, नूरपुर, जिला कांगड़ा में किया गया आयोजन

नूरपुर (भूषण शर्मा)--------- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.), शिमला ने नूरपुर वन मण्डल के वन अधिकारी, कर्मचारियों एवं फील्ड स्टाफ को नर्सरी एवं प्लांटेशन में शीशम के प्रबंधन हेतु एकीकृत दृष्टिकोण पर वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केन्द्र, जाच्छ, नूरपुर, जिला कांगड़ा में किया गया। प्रशिक्षण मुख्य रूप से शीशम को हानि पहुंचाने वाले रोगों और रोगजनकों के प्रबंधन एवं क्लोनल प्रोपेगेशन द्वारा शीशम की पौधशाला तैयार करने पर जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित था । डॉ. अश्विनी तपवाल, वरिष्ठ वैज्ञानिक, हि.व.अ.सं., शिमला और उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक ने मुख्य अतिथि अमित शर्मा, वन मंडलाधिकारी, वन मण्डल नूरपुर एवं विशिष्ट अतिथि, डॉ॰ विपिन गुलेरिया, सह-निदेशक क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केन्द्र जाच्छ, और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों के बारे में जानकारी दी और संस्थान के शोध कार्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. तपवाल ने बताया पेड़ पौधों पर बीमारी करने वाले कवक/फफूंद वन पारिस्थितिक तंत्र के लिए एक गंभीर खतरा हैं, जो पेड़ों की बड़े पैमाने पर मृत्यु और जैव विविधता संतुलन को अस्तव्यस्त करने का कारण बन सकते हैं। पेड़ों की संख्या को संरक्षित रखने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए रोगजनक कवक का प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। डा तपवाल ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के अतिरिक्त, गैनोडरमा व फुजेरियम कवक की प्रजातियाँ शीशम की संख्या कम होने का मुख्य कारण हैं। इसके लिए के जैव कवकनाशी बेहतर विकल्प प्रतीत होते हैं। इस संदर्भ में हि.व.अ.सं., शिमला ने शीशम को कवक जनित रोगों से बचाने के लिए ट्राइकोडर्मा प्रजाति से जैव कवकनाशी तैयार किया है। उन्होंने इस जैव कवकनाशी को तैयार और उपयोग करने की विधि भी सांझा की। इस के अतिरिक्त डॉ. तपवाल ने माइकोराइजल जैव उर्वरकों के उपयोग से टाल पौध स्टाक तैयार करने तथा वनों में माइकोराइजा में महत्व पर भी प्रकाश डाला। डॉ॰ विपिन गुलेरिया, क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केन्द्र जाच्छ ने कहा कि जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों का उपयोग फसलों की जैविक खेती में लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ समाधान हैं। उन्होंने प्रतिभागियों को फसल की खेती और रोग प्रबंधन के लिए पर्यावरण के अनुकूल साधनों को अपनाने की सलाह दी। श्री अमित शर्मा, वन मंडलाधिकारी, वन मण्डल नूरपुर ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि समय रहते वनों व पौधशाल में रोगों की पहचान करने से भविष्य में उनके द्वारा होने वाले प्रकोपों से बचा जा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों को पौध रोगों के निवारण हेतु पर्यावरण हितैषी प्रबंधन की सलाह दी। उन्होंने भविष्य में भी हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान व वन विभाग के मिलकर वन सबंधी समस्या पर काम करने पर जोर दिया। डॉ. बलकृषण तिवारी, वैज्ञानिक, हि.व.अ.सं., शिमला ने वृक्ष सुधार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया की उच्च गुणवत्ता वाले वृक्षों के चयन, प्रवर्धन एवं उचित प्रबंधन से वन उत्पादकता बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने संस्थान द्वारा शीशम के वृक्ष सुधार पर हो रहे कार्यों से अवगत कराया तथा प्लस पेड़ों के चयन विधि और बीज एवं कायिक प्रवर्धन द्वारा उच्च गुणवत्ता वाले पोधे विकसित करने के तरीकों को प्रतिभगियों से साझा किया। डॉ. तिवारी ने बताया की वृक्ष सुधार द्वारा शीशम के रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले प्रजातियों को विकसित किया जाना आवश्यक है एवं हि.व.अ.सं., शिमला इस दिशा मे प्रयासरत है।